वसंत भाग 2

‘मिठाईवाला’

(मॉड्यूल–2/2)

मिठाईवाला

संदर्भ एवं प्रसंग भाग 2

प्रस्तुत पाठ ‘मिठाईवाला’ हमारी पाठ्यपुस्तक वसंत भाग–2 से लिया गया है जिसके लेखक ‘भगवती प्रसाद बाजपेयी’ जी हैं।

‘मिठाईवाला’ इस पाठ में एक पिता का अपने बच्चों के प्रति स्नेह के भाव को बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया गया है। भाग-1 की कथावस्तु में एक व्यक्ति का फेरीवाले के रूप में अलग–अलग वस्तुएँ (पहले खिलौने फिर मुरलियाँ) लेकर गाँव आना और गा–गाकर बहुत ही सस्ते दामों में वस्तुओं को बेचना। भाग–2 की कथावस्तु में पुनः उसी फेरीवाले का आठ महीनों बाद मिठाई लेकर आना और उसी मादक स्वर में गाकर बेचना तथा रोहिणी के पूछने पर अपनी वास्तविक स्थिति से ज्ञात कराना। वह उन बच्चों में अपने बच्चों की छवि देखता तथा बच्चों का स्नेह प्राप्त करके उसे असीम सुख और आनंद की प्राप्ति होती है।

सारांश भाग 2

भाग-1 की पाठ्यवस्तु में एक व्यक्ति का फेरीवाले के रूप में आना और अलग–अलग वस्तुएँ बहुत ही सस्ते दामों पर बेचना। जैसे– सबसे पहले खिलौने लेकर आना फिर छह महीने बाद मुरली लेकर आना और अपने मधुर स्वर से बच्चों और बड़ों में अपनी पहचान बनाना।

इसके पश्चात् की कथावस्तु भाग-2 में वर्णित है–

आठ माह बाद सर्दी के दिन में रोहिणी छत पर बैठ अपने बाल सुखा रही थी, तभी उसके कानों में आवाज आई, "बच्चों को बहलाने वाला मिठाई वाला।" रोहिणी झट से नीचे आई। पति घर में नहीं थे। उसने दादी से मिठाई वाले को बुला लाने को कहा और स्वयं चिक के पीछे खड़ी हो गई। दादी ने मिठाई वाले को बुलाया।

मिठाईवाला आकर बैठ गया और मिठाईयों की विशेषता बताने लगा। उसने कहा कि वह पैसे की सोलह मिठाईयां देता है। दादी ने उसे पच्चीस देने को कहा तो वह न माना। रोहिणी ने दादी से कहा कि वह चार पैसे की मिठाईयां ले लें। फिर उसने दादी से मिठाई वाले से पूछने को कहा कि क्या वह शहर में पहली बार आया है। उसकी बात सुन मिठाई वाले ने बताया कि वह पहले मुरली और खिलौने लेकर भी आ चुका है। रोहिणी ने उससे फिर पूछा कि इन व्यवसायों से भला उसे क्या मिलता है? मिठाई वाले ने कहा कि खाने भर को मिल जाता है लेकिन जो संतोष और असीम सुख उसे प्राप्त होता है उसके आगे धन कुछ भी नहीं है। उसकी बातों से रोहिणी की उत्सुकता बढ़ गई। रोहिणी के अत्यधिक आग्रह पर मिठाई वाले ने अतिशय गंभीरता के साथ उसे अपनी कथा सुनाई।

वह मिठाईवाला अपने नगर का प्रतिष्ठित आदमी था। धन-धान्य की कमी न थी। स्त्री थी, बच्चे थे, परंतु भाग्य की लीला कुछ ऐसी रही कि अब कोई साथ नहीं है। जीवन कठिन हो गया है, इसलिए खिलौने और मिठाई के बहाने वह अपने बच्चों की खोज में निकला है। उसे आशा है कि उसके बच्चों ने कहीं न कहीं किसी रूप में जन्म अवश्य लिया होगा। वह पैसों के लिए नहीं बच्चों के बीच अपना मन बहलाने आता है। रोहिणी ने देखा मिठाई वाले की आंखें आंसुओं से गीली थीं। उसी समय चुन्नू-मुन्नू आ गए। मिठाई वाले ने उन्हें मिठाई दी। रोहिणी ने उसकी ओर पैसे (मिठाई के दाम) फेंके तो उसने कहा कि अब इस बार वह पैसे न ले सकेगा। उसने पेटी उठाई और अपने मधुर स्वर में गाता हुआ निकल गया।

धन्यवाद